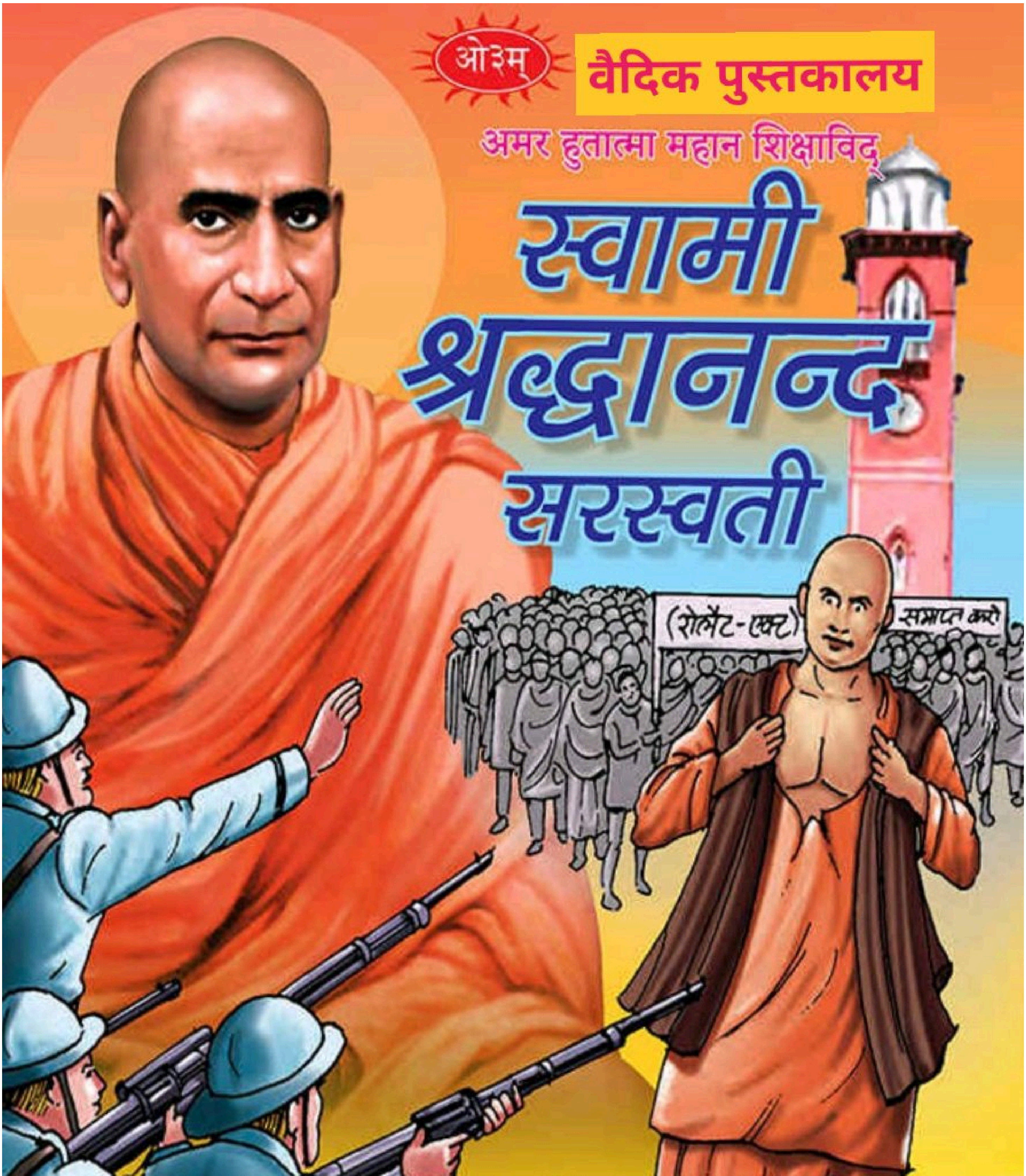
ओ३म्
वैदिक पुस्तकालय
अमर हुतात्मा महान शिक्षाविद्
स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती
(रोलैट-एक्ट)
समाप्त करो
BHARAT MAKWANA

ओ३म्

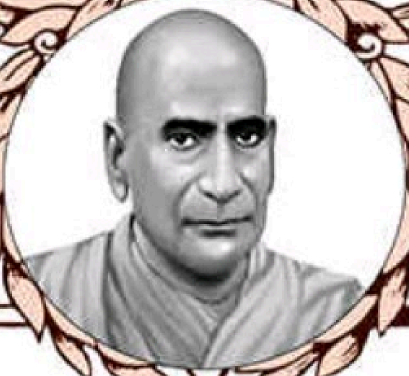

अमर हुतात्मा महान शिक्षाविद्

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

स्वामी जी, अंग्रेजी स्कूलों में पढ़ने के कारण उन पर पाश्चात्य सभ्यता का रंग चढ़ गया और वे अनीश्वरवादी तथा भोगपरस्त व्यक्ति बन गये थे। परन्तु एक बार अपने पिता के कहने पर वे आर्यसमाज के संस्थापक 'महर्षि दयानन्द' का प्रवचन सुनने चले गये तभी से उनके जीवन में बदलाव आने लगा और आगे चलकर वे एक सच्चे आर्यसमाजी बन गये। उन्होंने महर्षि दयानन्द की इच्छा को पूर्ण करने के लिए हरिद्वार में 'गुरुकुल कांगड़ी' नामक शिक्षण संस्थान की स्थापना की जो आज विश्व का प्रख्यात विश्वविद्यालय है। स्त्री शिक्षा के प्रबल हिमायती स्वामी श्रद्धानन्द को अछूतों का उद्धार करने के कारण महान समाज सुधारक माना जाता है। वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने पवित्र वेद मंत्रों का उच्चारण करते हुए जामा मस्जिद की मिम्बर से लोगो को स्वराज एवं स्वधर्म के लिए प्रेरित करने का साहस किया था। स्वामी जी की निःस्वार्थ सेवा भावना से दिल्ली का प्रबुद्ध मुस्लिम समुदाय बेहद प्रभावित था।

स्वामी श्रद्धानन्द की यह प्रेरणादायक चित्रकथा विशेषतौर पर बच्चों, किशोरों और युवाओं के लिए तैयार की गयी है, ताकि वे भी उनके जैसे स्वदेशभक्त, स्वाभिमान, वैदिक धर्म और भारतीय संस्कारों के रंग में रंग जाएँ।

लेखन-चित्रांकन
भारत मकवाना

सहयोग
दीपक मकवाना

स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

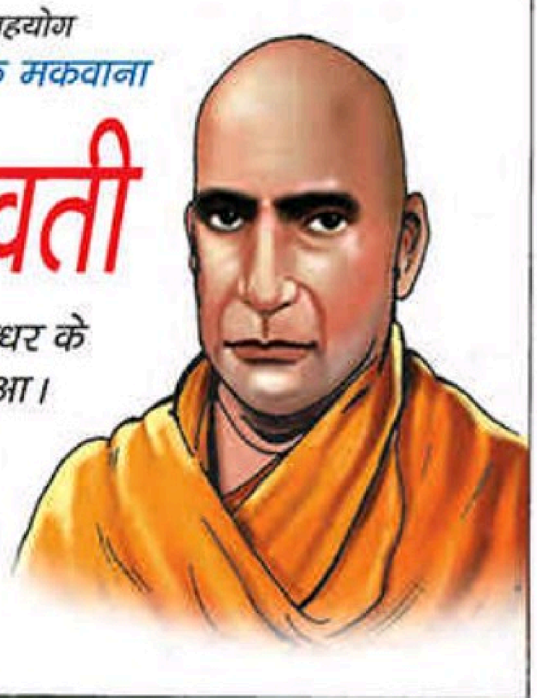

2 फरवरी 1856 के मार्च मास में पंजाब के जिला जालन्धर के 'तलवन' गाँव मे नानकचन्द के यहाँ एक पुत्र रत्न पैदा हुआ। यही बालक आगे चलकर स्वामी श्रद्धानन्द के नाम से प्रसिद्ध हुआ। स्वामी श्रद्धानन्द का असली नाम था 'बृहस्पति' लेकिन घर में उन्हें मुंशीराम के नाम से पुकारा जाता था, यह नाम उनके सन्यास ग्रहण करने तक चलता रहा।

सरकारी स्कूल के बाद आगे की शिक्षा इलाहाबाद के म्योर सैंट्रल कॉलेज में हुई। अंग्रेजी स्कूलों में पढ़ने के कारण उन पर पश्चिमी सभ्यता का रंग चढ़ गया और वे अनीश्वरवादी तथा भोगपरस्त व्यक्ति बन गये।
आओ मित्र! आज क्लब में चलें, वहां खूब मौज-मस्ती करेंगे।
लेकिन मुंशीराम, क्लब का सारा बिल तुम्हें ही देना होगा। मेरी जेब तो बिल्कुल खाली है।
Star Club

मुंशीराम ने बड़े घमंड से जवाब दिया-
मेरे होते हुए तुम फिक्र क्यों करते हो मित्र! क्लब का सारा खर्च मैं उठाऊँगा, तुम जानते नहीं? मेरे पिता इस शहर के कोतवाल हैं, कोतवाल!

क्लब में दोनों मित्र-
मुंशीराम! यह बताओ, तुम्हारे पिता तो पुलिस में होते हुए भी इतने धर्मनिष्ठ व्यक्ति हैं...
और तुम ठहरे पूरे अंग्रेज, ऐसा क्यों? क्या तुम्हें अपना धर्म अच्छा नहीं लगता?

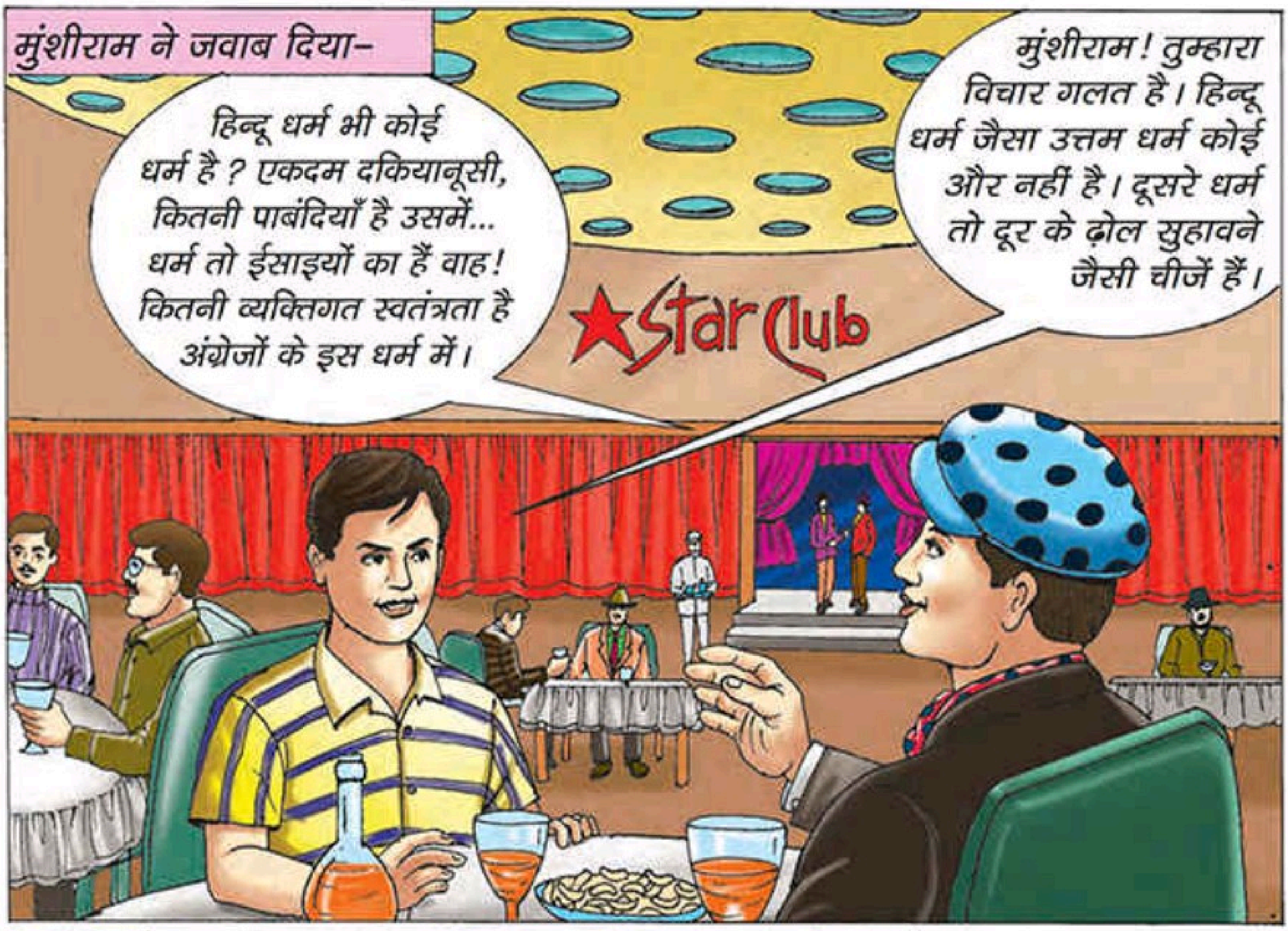
मुंशीराम ने जवाब दिया–
हिन्दू धर्म भी कोई धर्म है ? एकदम दकियानूसी, कितनी पाबंदियाँ है उसमें... धर्म तो ईसाइयों का हैं वाह! कितनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता है अंग्रेजों के इस धर्म में।
मुंशीराम! तुम्हारा विचार गलत है। हिन्दू धर्म जैसा उत्तम धर्म कोई और नहीं है। दूसरे धर्म तो दूर के ढ़ोल सुहावने जैसी चीजें हैं।
Star Club

बोर मत करो मित्र! व्हिस्की पीयो और आनन्द लो। सच कहता हूँ एक दिन मैं इस धर्म को हमेशा के लिए गुडबाई कहकर ईसाई धर्म स्वीकार कर लूँगा।
मित्र! सच कहता हूँ बाद में तुम्हें पश्चात्ताप होगा।
Star Club
परन्तु मुंशीराम को तो ईसाई धर्म का नशा चढ़ा हुआ था।

जब नानकचन्द ने अपने नौजवान पुत्र के आचरण बिगड़ते देखे तो वे बहुत दुःखी हुए और अपनी पत्नी से बोले–
सुन रही हो ? तुम्हारा लाड़ला बेटा दिनों–दिन बिगड़ता जा रहा है और विदेशी सभ्यता में रंगता जा रहा है। उसकी संगत शहर के गुंडों जैसी हो गई है।
तो आप मुझे क्यों सुना रहे हो ?
मुंशीराम की माता जी–
आपका ही बेटा है। आपने ही उसे इतना सिर चढ़ा रखा है...
...मैंने तो यहाँ तक सुना है कि वह अंग्रेजी क्लबों में जाकर शराब भी पीने लगा है। जल्दी कुछ कीजिए नहीं तो लड़का हाथ से निकल जायेगा।
उसको सुधारने का एक ही उपाय है। उसका विवाह कर दिया जाये।

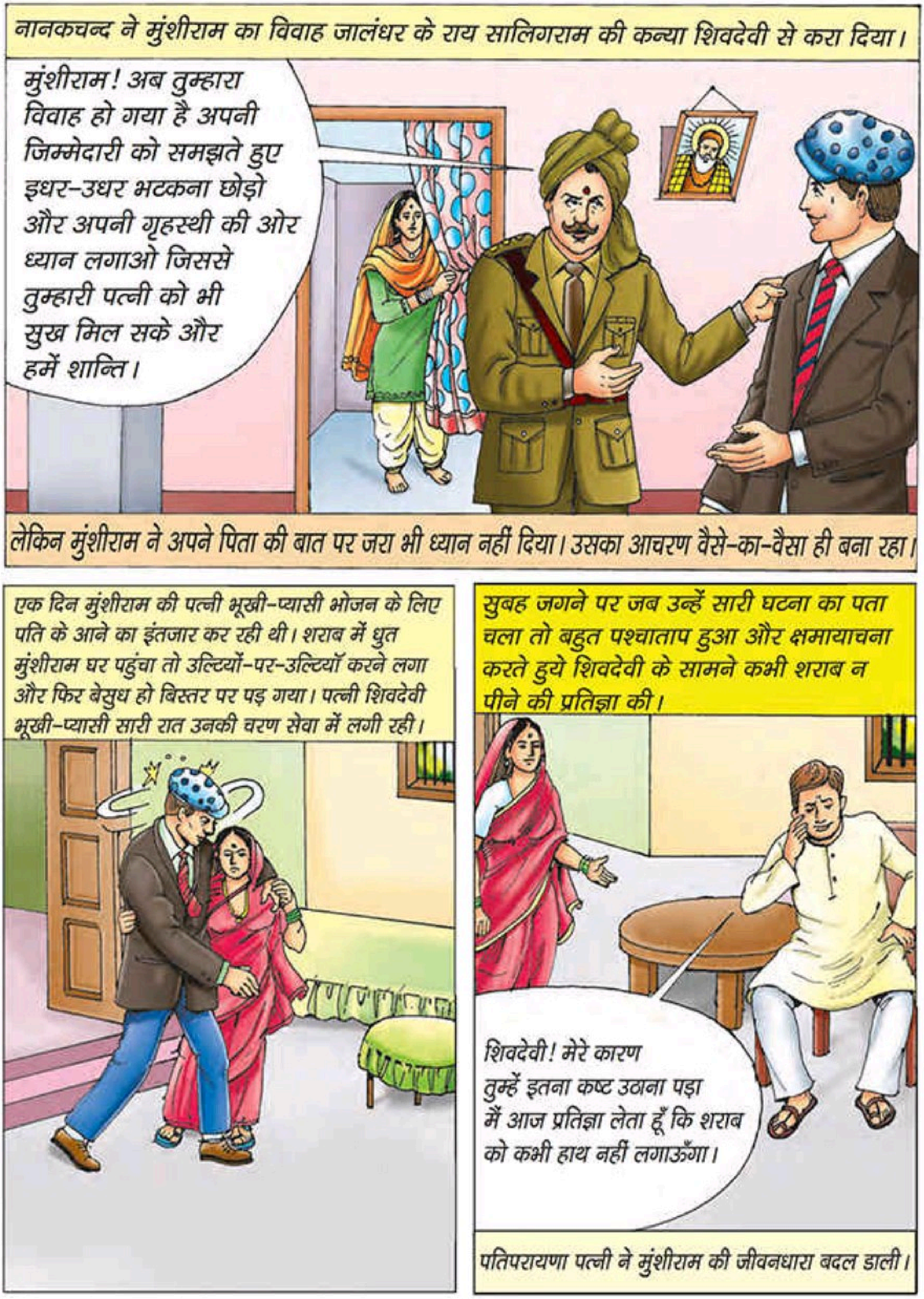
नानकचन्द ने मुंशीराम का विवाह जालंधर के राय सालिगराम की कन्या शिवदेवी से करा दिया।
मुंशीराम! अब तुम्हारा विवाह हो गया है अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए इधर-उधर भटकना छोड़ो और अपनी गृहस्थी की ओर ध्यान लगाओ जिससे तुम्हारी पत्नी को भी सुख मिल सके और हमें शान्ति।
लेकिन मुंशीराम ने अपने पिता की बात पर जरा भी ध्यान नहीं दिया। उसका आचरण वैसे-का-वैसा ही बना रहा।
एक दिन मुंशीराम की पत्नी भूखी-प्यासी भोजन के लिए पति के आने का इंतजार कर रही थी। शराब में धुत मुंशीराम घर पहुंचा तो उल्टियों-पर-उल्टियाँ करने लगा और फिर बेसुध हो बिस्तर पर पड़ गया। पत्नी शिवदेवी भूखी-प्यासी सारी रात उनकी चरण सेवा में लगी रही।
सुबह जगने पर जब उन्हें सारी घटना का पता चला तो बहुत पश्चाताप हुआ और क्षमायाचना करते हुये शिवदेवी के सामने कभी शराब न पीने की प्रतिज्ञा की।
शिवदेवी! मेरे कारण तुम्हें इतना कष्ट उठाना पड़ा मैं आज प्रतिज्ञा लेता हूँ कि शराब को कभी हाथ नहीं लगाऊँगा।
पतिपरायणा पत्नी ने मुंशीराम की जीवनधारा बदल डाली।

❖ बुरे व्यक्ति का अर्थ ये नहीं कि वह हमेशा बुरा ही रहेगा। -स्वामी श्रद्धानन्द

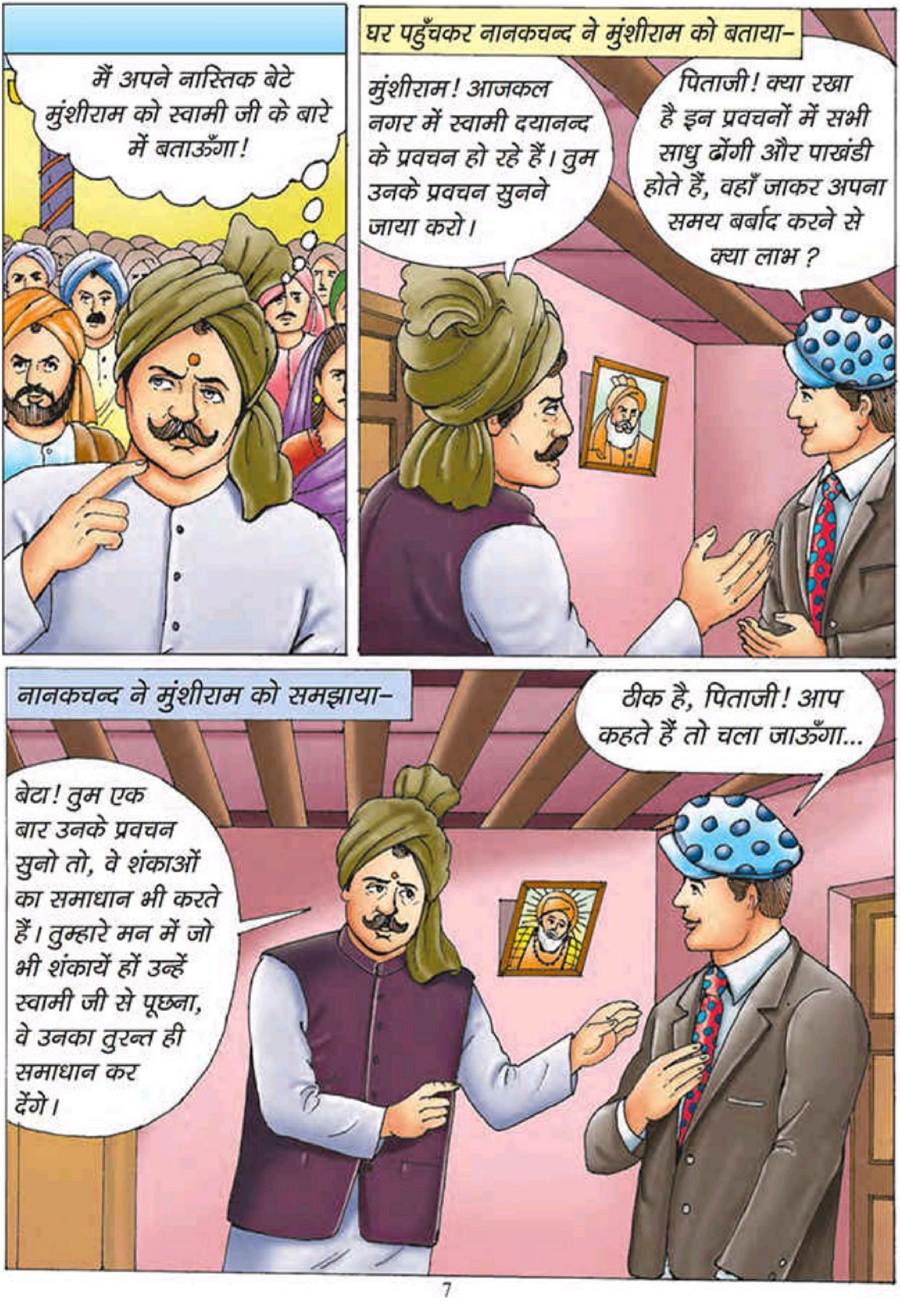
मैं अपने नास्तिक बेटे मुंशीराम को स्वामी जी के बारे में बताऊँगा!
घर पहुँचकर नानकचन्द ने मुंशीराम को बताया-
मुंशीराम! आजकल नगर में स्वामी दयानन्द के प्रवचन हो रहे हैं। तुम उनके प्रवचन सुनने जाया करो।
पिताजी! क्या रखा है इन प्रवचनों में सभी साधु ढोंगी और पाखंडी होते हैं, वहाँ जाकर अपना समय बर्बाद करने से क्या लाभ ?
नानकचन्द ने मुंशीराम को समझाया-
बेटा! तुम एक बार उनके प्रवचन सुनो तो, वे शंकाओं का समाधान भी करते हैं। तुम्हारे मन में जो भी शंकायें हों उन्हें स्वामी जी से पूछना, वे उनका तुरन्त ही समाधान कर देंगे।
ठीक है, पिताजी! आप कहते हैं तो चला जाऊँगा...

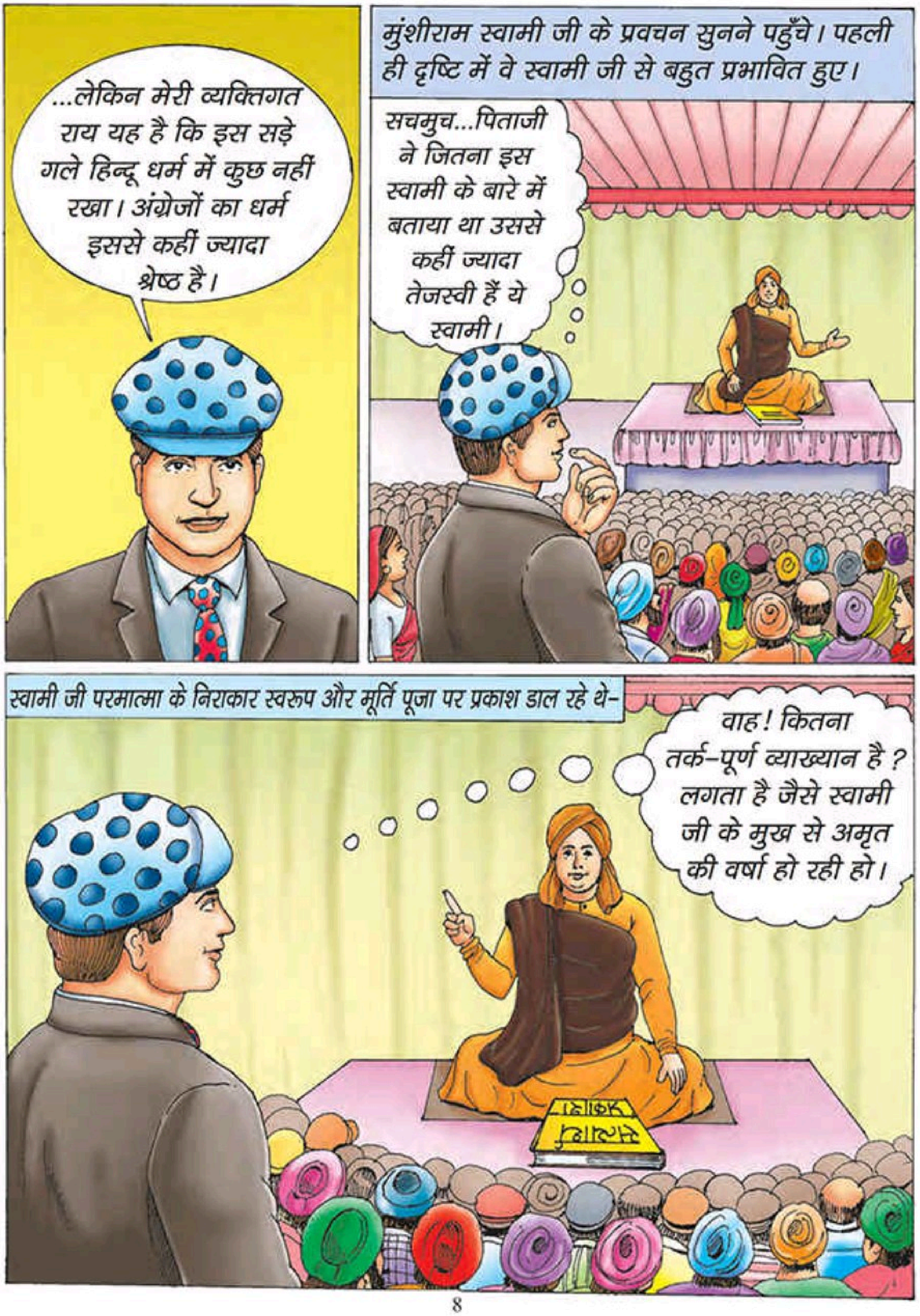
...लेकिन मेरी व्यक्तिगत राय यह है कि इस सड़े गले हिन्दू धर्म में कुछ नहीं रखा। अंग्रेजों का धर्म इससे कहीं ज्यादा श्रेष्ठ है।
मुंशीराम स्वामी जी के प्रवचन सुनने पहुँचे। पहली ही दृष्टि में वे स्वामी जी से बहुत प्रभावित हुए।
सचमुच...पिताजी ने जितना इस स्वामी के बारे में बताया था उससे कहीं ज्यादा तेजस्वी हैं ये स्वामी।
स्वामी जी परमात्मा के निराकार स्वरूप और मूर्ति पूजा पर प्रकाश डाल रहे थे-
वाह! कितना तर्क-पूर्ण व्याख्यान है ? लगता है जैसे स्वामी जी के मुख से अमृत की वर्षा हो रही हो।

लेकिन उसी दौरान दुर्भाग्य से मुंशीराम बुखार से पीड़ित हो गये और स्वामी जी के व्याख्यान सुनने न जा सके। कुछ समय बरेली में प्रवचन देने के पश्चात् स्वामी दयानन्द भी अन्य शहरों में प्रवचन के लिए चले गये।

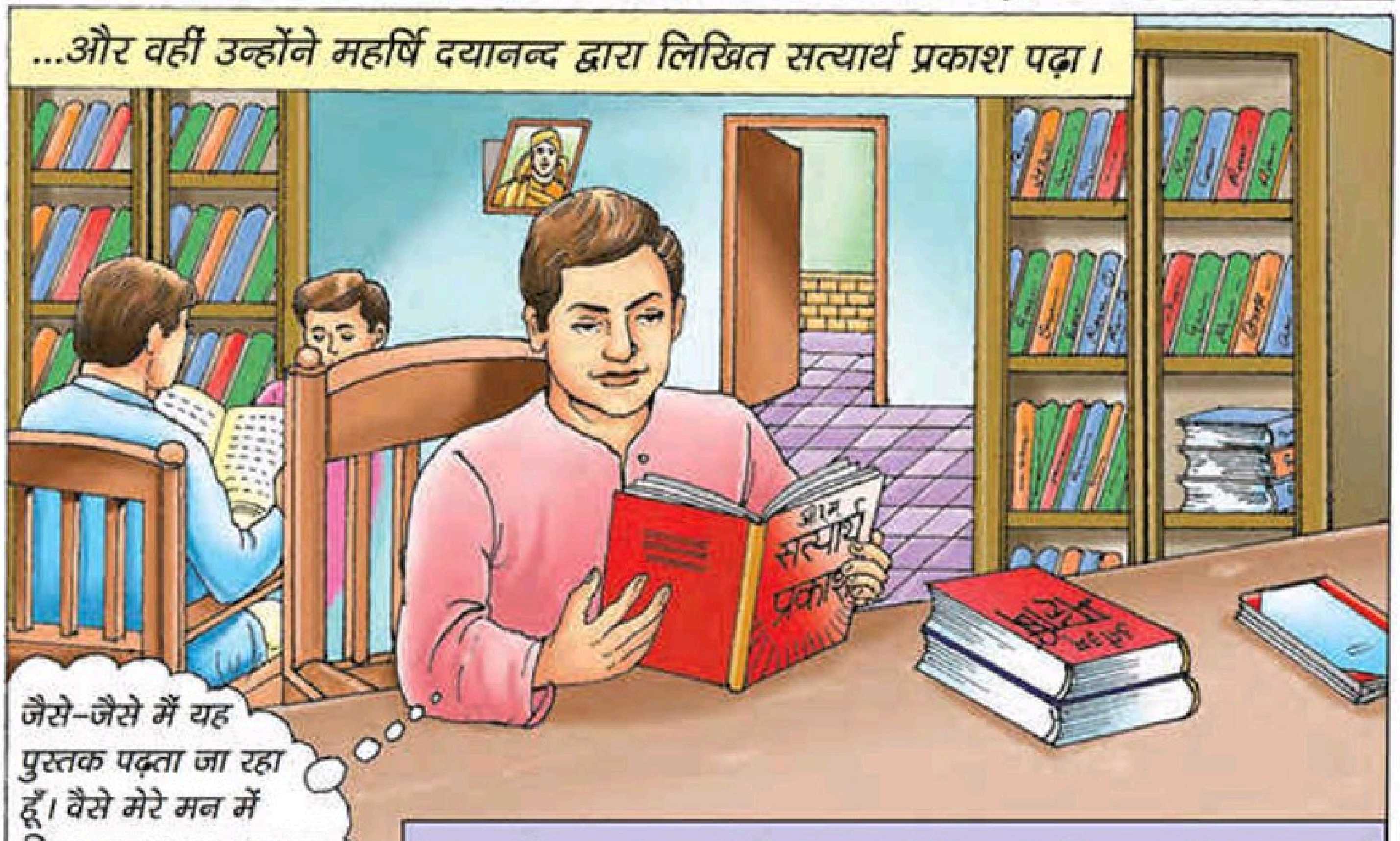

❖ बुरा व्यक्ति सुधर कर अच्छे बन सकते हैं। असतो मा सद्गमय और यद् भद्रं तन्न आसुव का यही आशय है। बुराइयाँ अमर नहीं है।

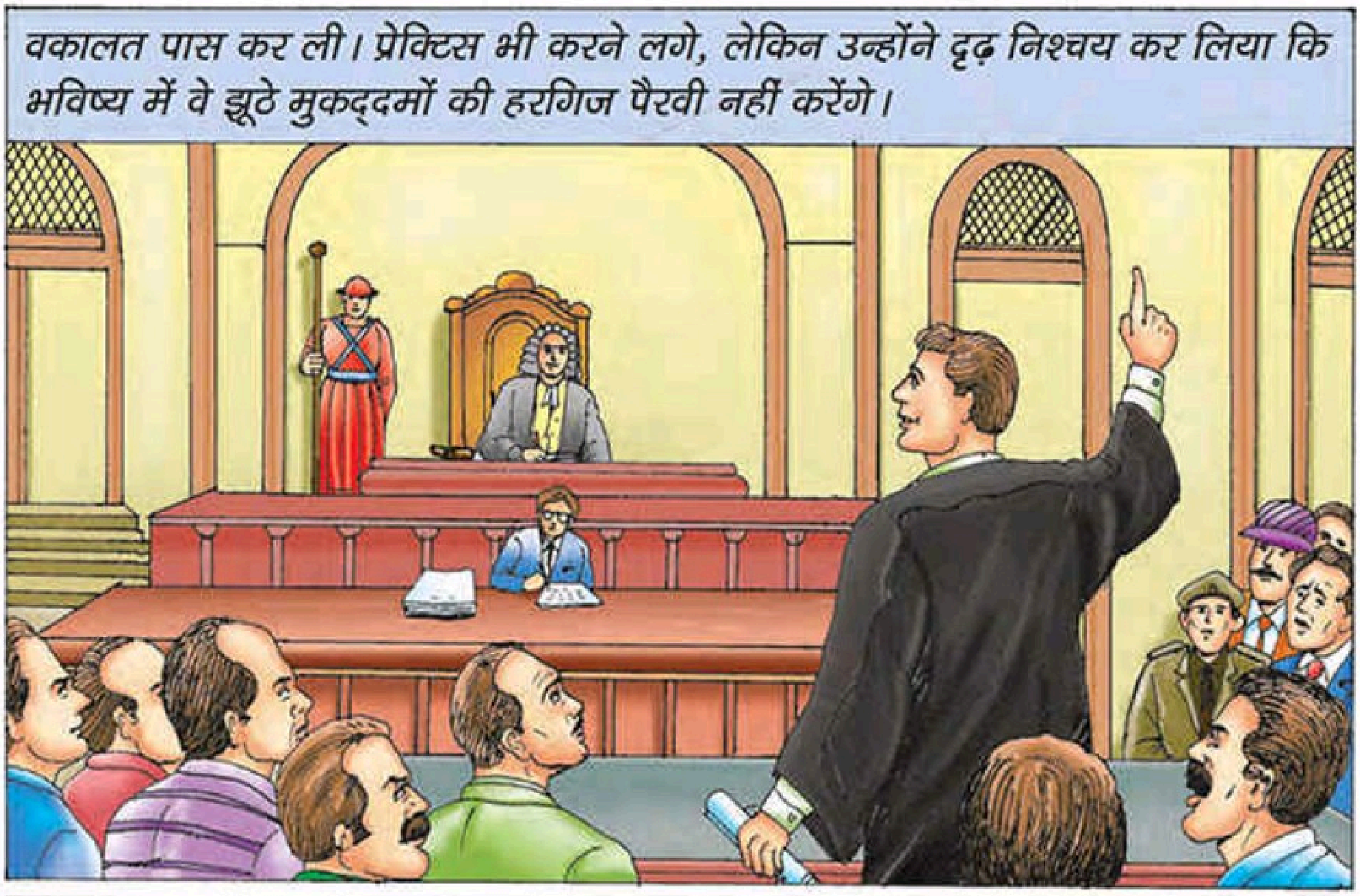
वकालत पास कर ली। प्रेक्टिस भी करने लगे, लेकिन उन्होंने दृढ़ निश्चय कर लिया कि भविष्य में वे झूठे मुकद्दमों की हरगिज पैरवी नहीं करेंगे।

वकीलों में मुंशीराम की स्पष्टवादिता का सिक्का खूब जम गया। लोगों में उनके चर्चे होने लगे।
कुछ भी कहो, मुंशीराम है अपने ही ढंग का इंसान। कहाँ तो मांस-मदिरा, पाश्चात्य सभ्यता का इतना दीवाना था कि, अंग्रेजों को अपना आदर्श समझता था और आज हालत ये है कि उनका कट्टर प्रतिद्वन्द्वी बन गया है।
HIGH COURT
उसके इस बदलाव में आर्यसमाज का हाथ है। जब से मुंशीराम ने आर्यसमाज में जाना शुरू किया है, उसकी तो जैसे काया ही पलट गई है।

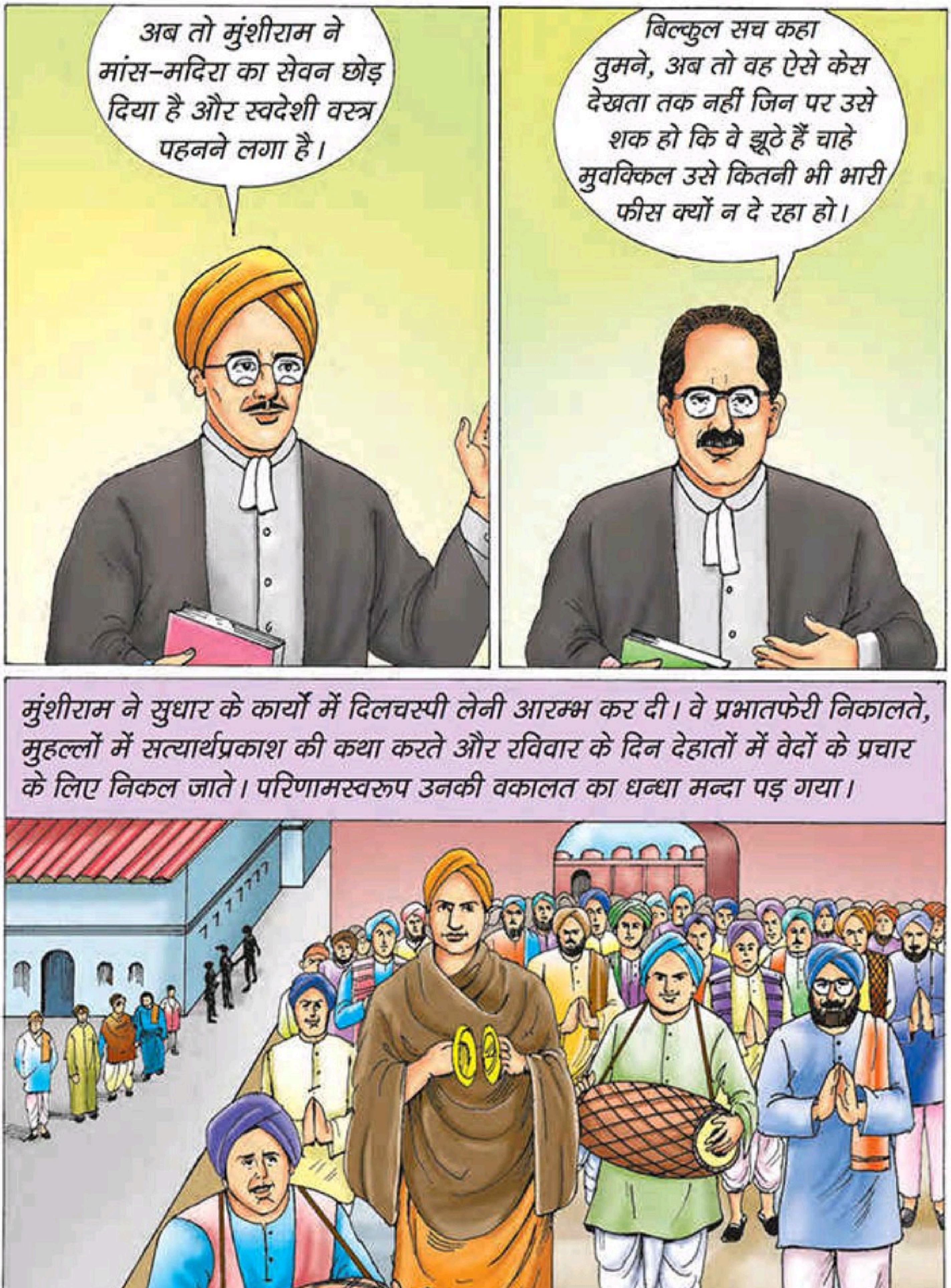
अब तो मुंशीराम ने मांस–मदिरा का सेवन छोड़ दिया है और स्वदेशी वस्त्र पहनने लगा है।
बिल्कुल सच कहा तुमने, अब तो वह ऐसे केस देखता तक नहीं जिन पर उसे शक हो कि वे झूठे हैं चाहे मुवक्किल उसे कितनी भी भारी फीस क्यों न दे रहा हो।
मुंशीराम ने सुधार के कार्यों में दिलचस्पी लेनी आरम्भ कर दी। वे प्रभातफेरी निकालते, मुहल्लों में सत्यार्थप्रकाश की कथा करते और रविवार के दिन देहातों में वेदों के प्रचार के लिए निकल जाते। परिणामस्वरूप उनकी वकालत का धन्धा मन्दा पड़ गया।

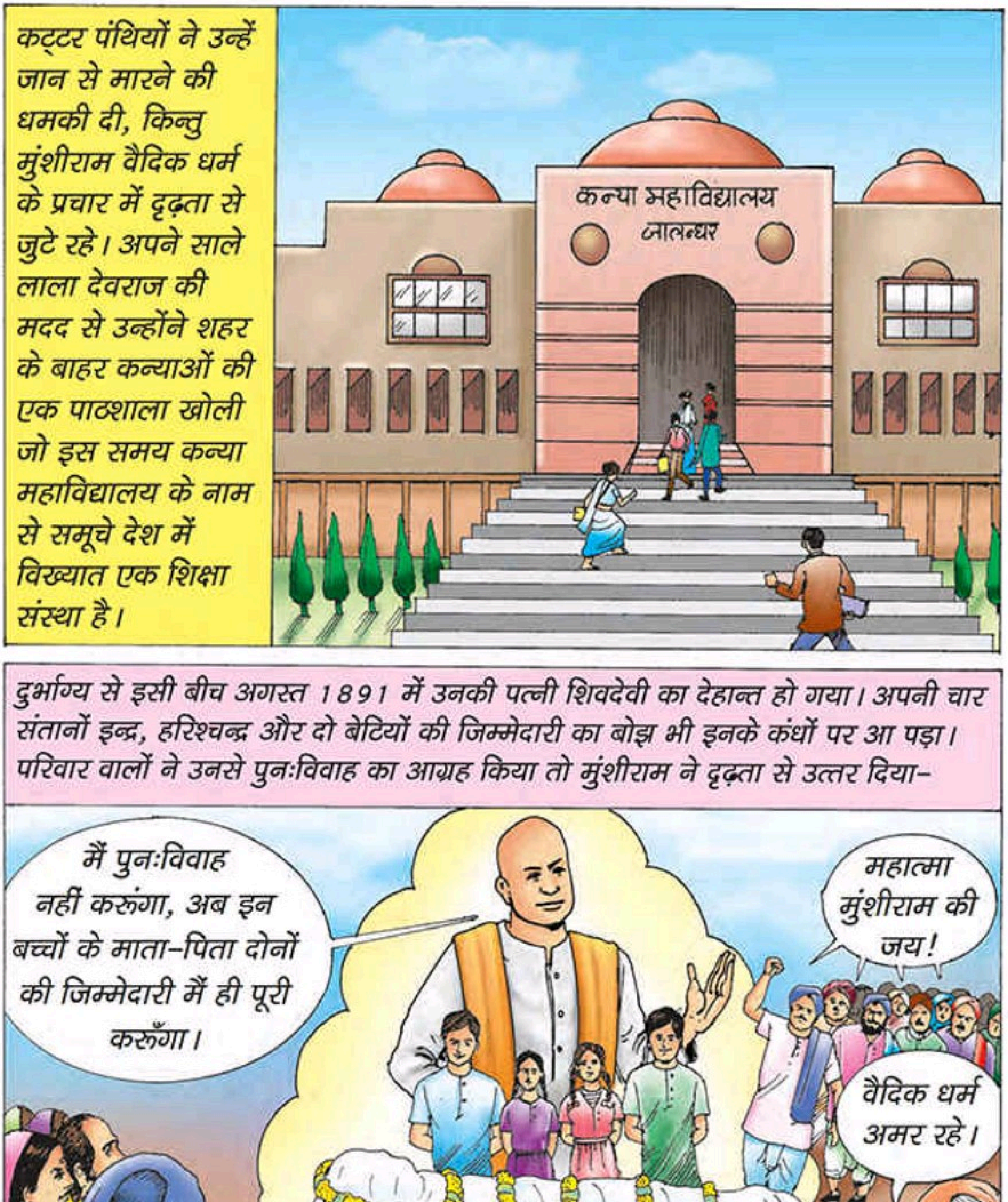
कट्टर पंथियों ने उन्हें जान से मारने की धमकी दी, किन्तु मुंशीराम वैदिक धर्म के प्रचार में दृढ़ता से जुटे रहे। अपने साले लाला देवराज की मदद से उन्होंने शहर के बाहर कन्याओं की एक पाठशाला खोली जो इस समय कन्या महाविद्यालय के नाम से समूचे देश में विख्यात एक शिक्षा संस्था है।
कन्या महाविद्यालय
जालन्धर
दुर्भाग्य से इसी बीच अगस्त 1891 में उनकी पत्नी शिवदेवी का देहान्त हो गया। अपनी चार संतानों इन्द्र, हरिश्चन्द्र और दो बेटियों की जिम्मेदारी का बोझ भी इनके कंधों पर आ पड़ा। परिवार वालों ने उनसे पुनःविवाह का आग्रह किया तो मुंशीराम ने दृढ़ता से उत्तर दिया–
मैं पुनःविवाह नहीं करूंगा, अब इन बच्चों के माता–पिता दोनों की जिम्मेदारी मैं ही पूरी करूँगा।
महात्मा मुंशीराम की जय!
वैदिक धर्म अमर रहे।
मुंशीराम के इस पवित्र–सात्त्विक जीवन का जनता पर गहरा प्रभाव पड़ा। लोग उन्हें महात्मा के नाम से पुकारने लगे।

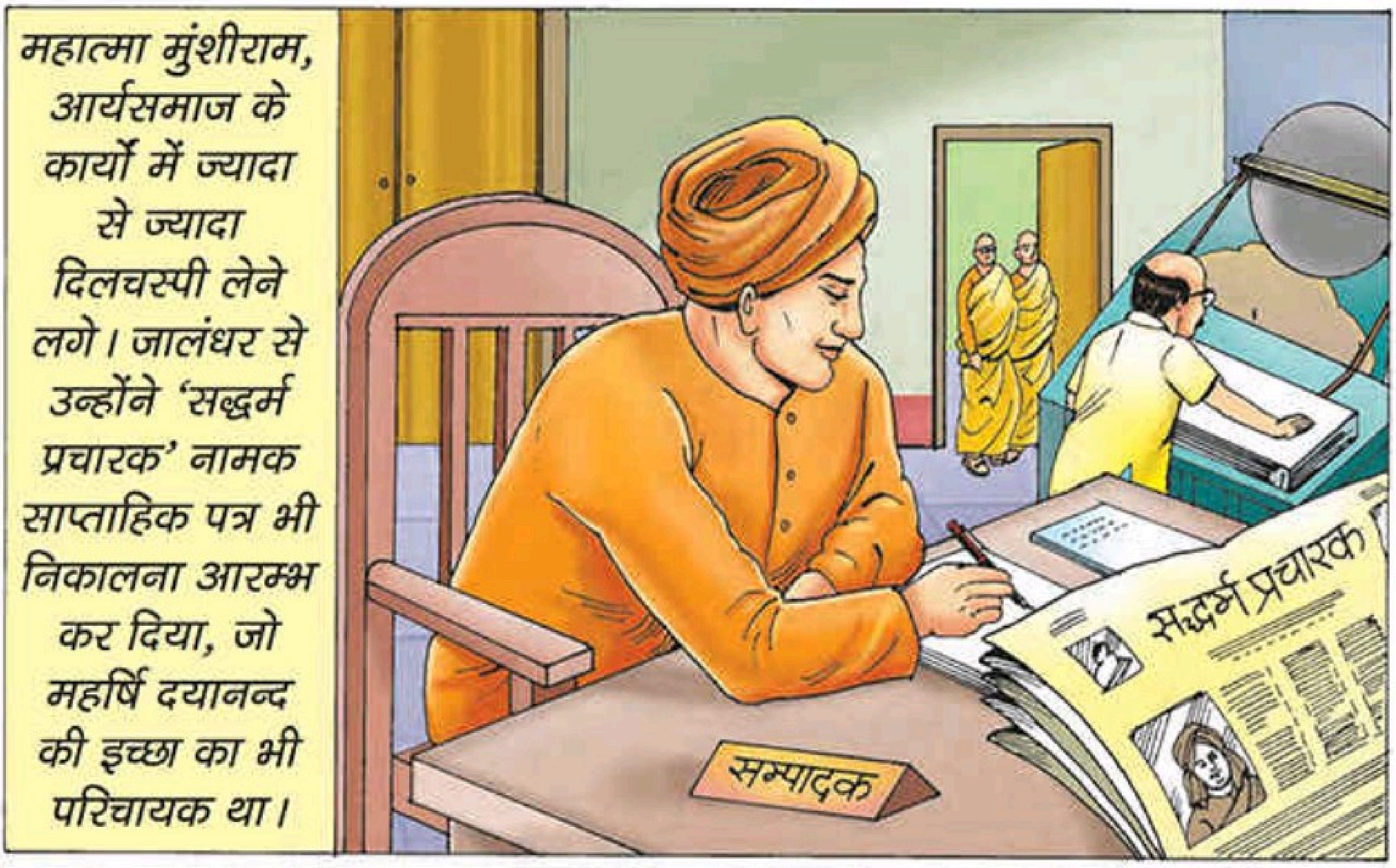
महात्मा मुंशीराम, आर्यसमाज के कार्यों में ज्यादा से ज्यादा दिलचस्पी लेने लगे। जालंधर से उन्होंने 'सद्धर्म प्रचारक' नामक साप्ताहिक पत्र भी निकालना आरम्भ कर दिया, जो महर्षि दयानन्द की इच्छा का भी परिचायक था।
सद्धर्म प्रचारक
सम्पादक

महात्मा मुंशीराम इतने पर भी संतुष्ट नहीं हुए–
साथियो! हमें महर्षि दयानन्द की इच्छा को पूर्ण करने के लिए एक गुरुकुल की स्थापना करनी चाहिए, ताकि वैदिक संस्कृति का प्रचार हम पूरे जोरों से कर सकें।
लेकिन गुरुकुल की स्थापना हेतु धन कहाँ से आयेगा ?
मैं पूरे देश का भ्रमण कर, गुरुकुल बनाने के लिए चंदा एकत्र करूँगा। मुझे आशा है इस प्रकार अच्छा–खासा धन एकत्र हो जायेगा और मित्रो, कुछ प्रयास आप लोग भी करें।
महात्मा जी! हम तैयार हैं।

❖ उस समय के 'चालीस हज़ार' रुपये आज के (2015) में लगभग 'पांच करोड़' रुपये बनेंगे।

आखिरकार 24 मार्च 1902 को महर्षि दयानन्द का सपना साकार हो गया। उस आश्रम का नाम रखा गया 'गुरुकुल कांगड़ी'।

महात्मा मुंशीराम ने अपना सब कुछ बेचकर गुरुकुल को अर्पण कर दिया। सबसे पहले गुरुकुल में अपने दोनों पुत्रों का दाखिला कराया और लगातार 17 वर्षों तक गुरुकुल के आचार्य और मुख्य अधिष्ठाता के रूप में बगैर कोई पैसा लिए काम करते रहे।

पांच छह वर्षों में ही इस गुरुकुल ने इतनी प्रसिद्धि प्राप्त कर ली कि बड़े-बड़े लोग अपने बच्चों को उसमें...

...पढ़ने के लिए भेजने लगे और तन, मन, धन से गुरुकुल को चलाने में महात्मा मुंशीराम जी की मदद करने लगे।

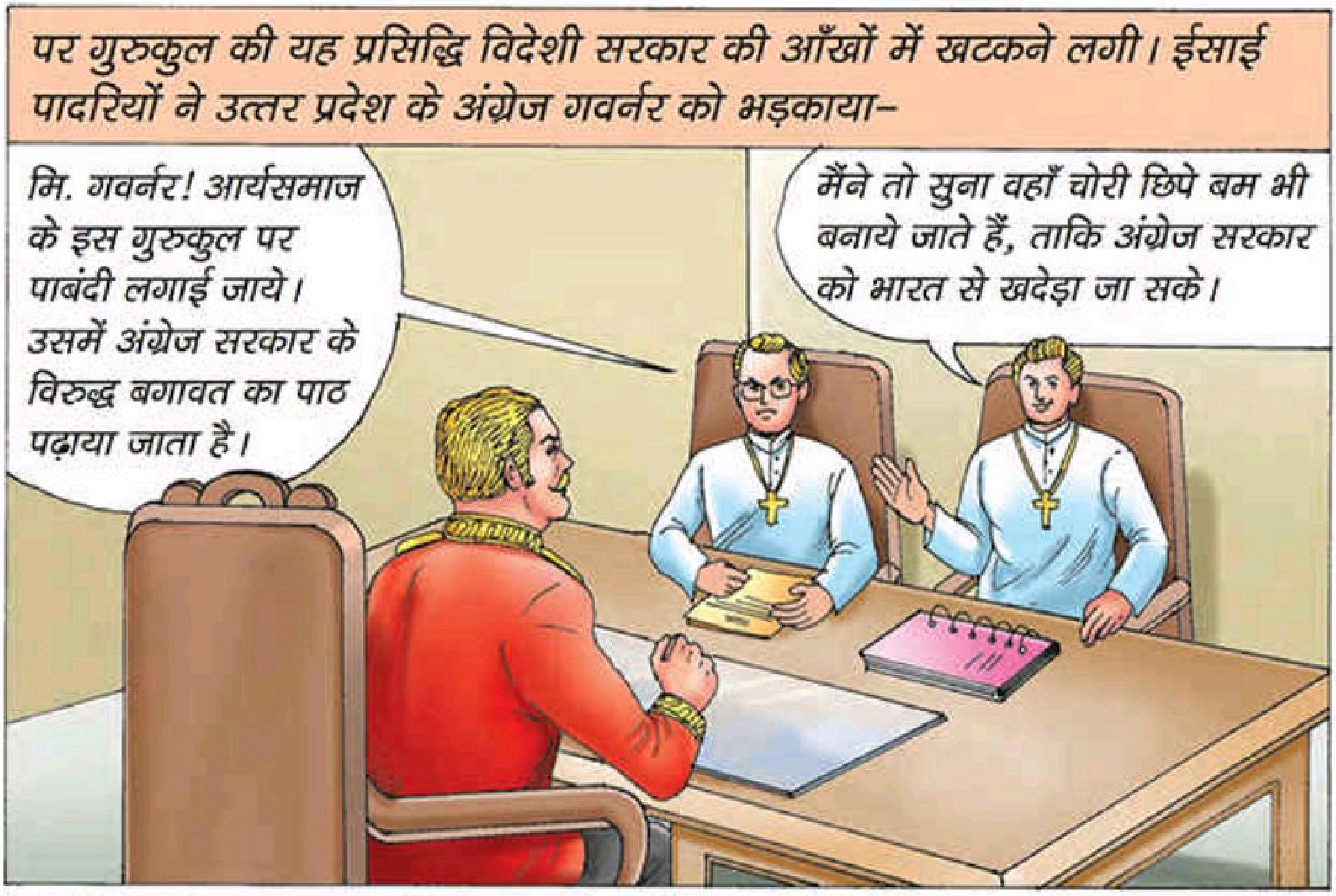
पर गुरुकुल की यह प्रसिद्धि विदेशी सरकार की आँखों में खटकने लगी। ईसाई पादरियों ने उत्तर प्रदेश के अंग्रेज गवर्नर को भड़काया–
मि. गवर्नर! आर्यसमाज के इस गुरुकुल पर पाबंदी लगाई जाये। उसमें अंग्रेज सरकार के विरुद्ध बगावत का पाठ पढ़ाया जाता है।
मैंने तो सुना वहाँ चोरी छिपे बम भी बनाये जाते हैं, ताकि अंग्रेज सरकार को भारत से खदेड़ा जा सके।

ब्रिटिश पार्लियामेंट की ओर से गुरुकुल कांगड़ी की जांच करने के लिए 'मि. रेम्ज मेकडानल्ड' की अध्यक्षता में एक जांच कमीशन हरिद्वार गया...

...जांच कमीशन ने गुरुकुल का निरीक्षण किया। लेकिन वहाँ कोई सन्देहजनक सूत्र उन्हें न मिला।
सर! हमने गुरुकुल का अच्छी तरह से निरीक्षण किया पर हमें कोई सन्देह जनक सूत्र नहीं मिला।

कुछ समय के लिए पादरियों और अंग्रेज आलोचकों का मुँह बन्द हो गया लेकिन वे निरन्तर सरकार को भड़काते रहे। फलस्वरूप सरकार आर्यसमाज संस्था को अपराधी और देशद्रोही समझने लगी।
ठीक है हम दोबारा जांच करवाते हैं।

गोरी नौकरशाही के इशारे पर अक्टूबर 1906 में पटियाला रियासत में 84 आर्यसमाजी गिरफ्तार कर लिये गये और उन पर राजद्रोही होने का आरोप लगा दिया गया।
POLICE

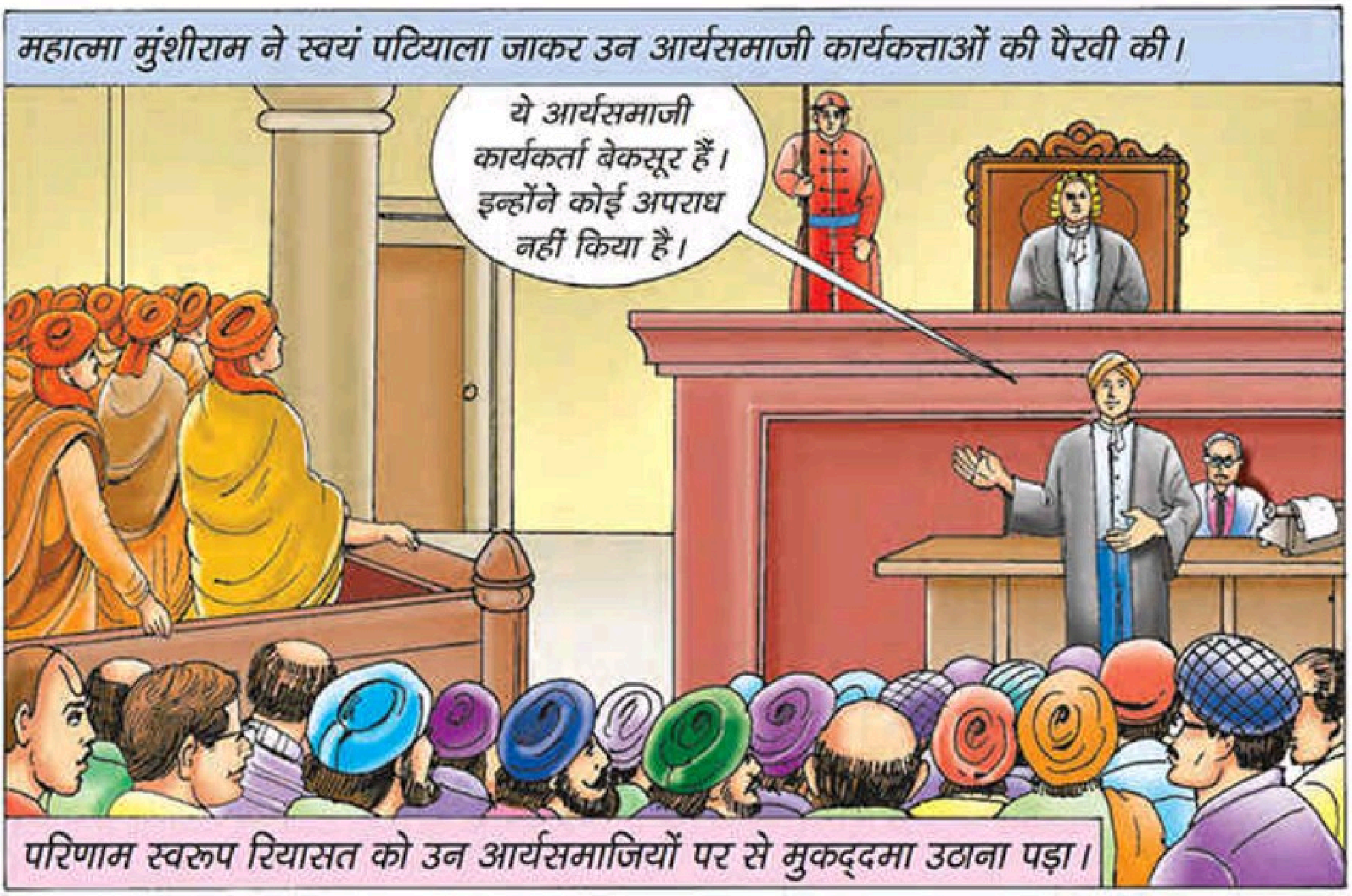
महात्मा मुंशीराम ने स्वयं पटियाला जाकर उन आर्यसमाजी कार्यकर्त्ताओं की पैरवी की।
ये आर्यसमाजी कार्यकर्ता बेकसूर हैं। इन्होंने कोई अपराध नहीं किया है।
परिणाम स्वरुप रियासत को उन आर्यसमाजियों पर से मुकद्दमा उठाना पड़ा।

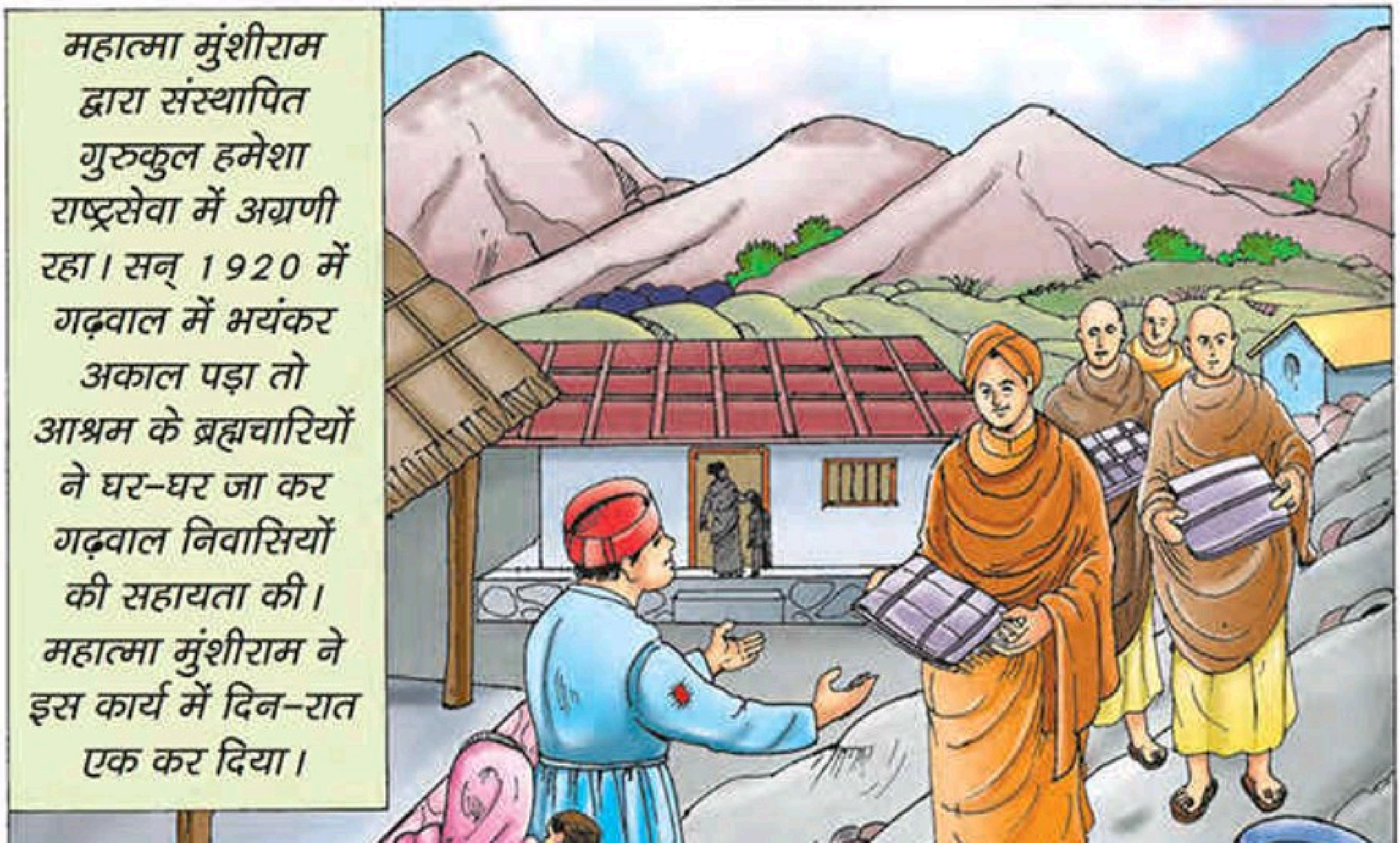
महात्मा मुंशीराम द्वारा संस्थापित गुरुकुल हमेशा राष्ट्रसेवा में अग्रणी रहा। सन् 1920 में गढ़वाल में भयंकर अकाल पड़ा तो आश्रम के ब्रह्मचारियों ने घर-घर जा कर गढ़वाल निवासियों की सहायता की। महात्मा मुंशीराम ने इस कार्य में दिन-रात एक कर दिया।

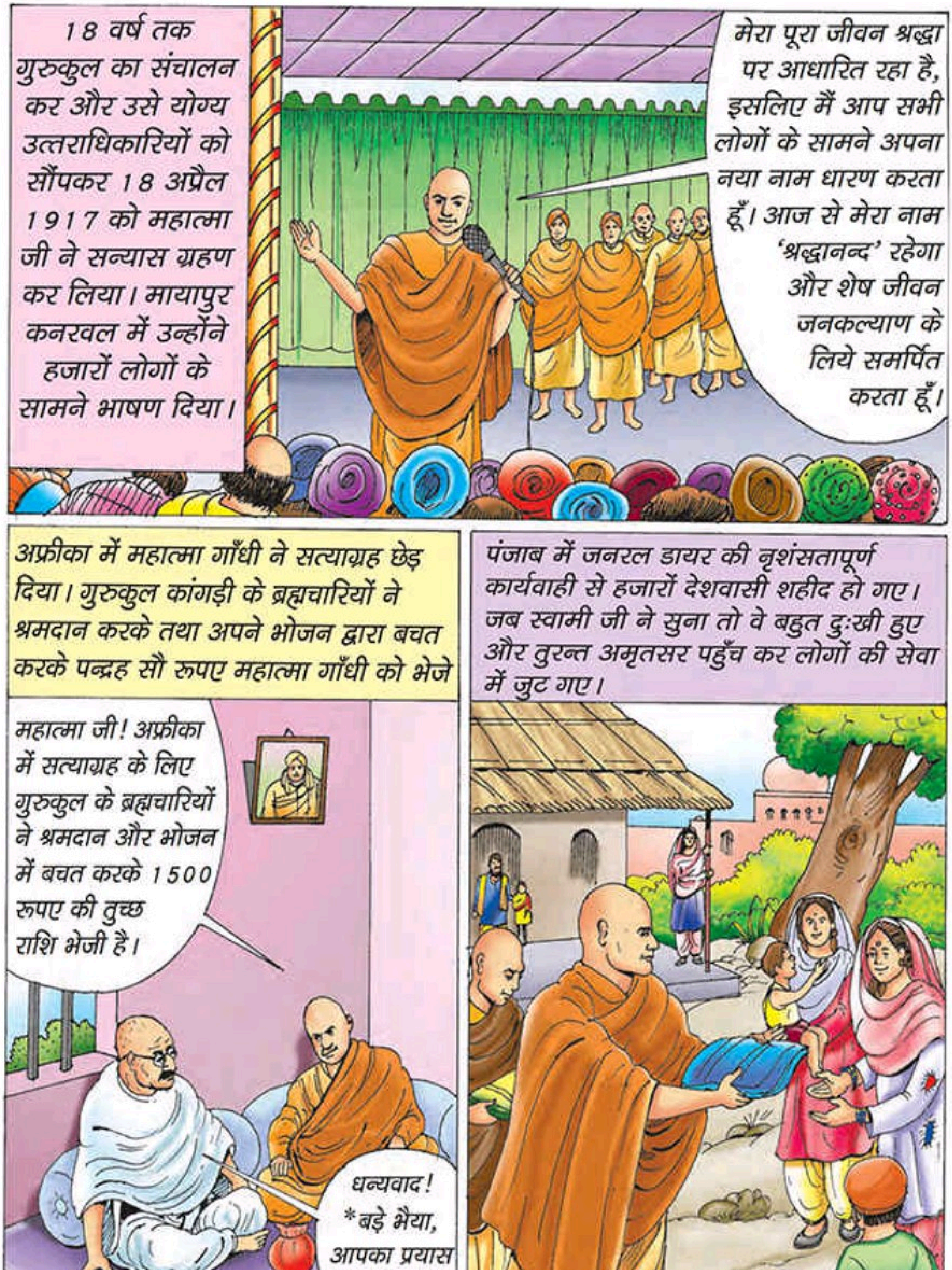

*महात्मा गाँधी स्वामी श्रद्धानन्द को स्नेहपूर्वक बड़े भैया कहते थे।

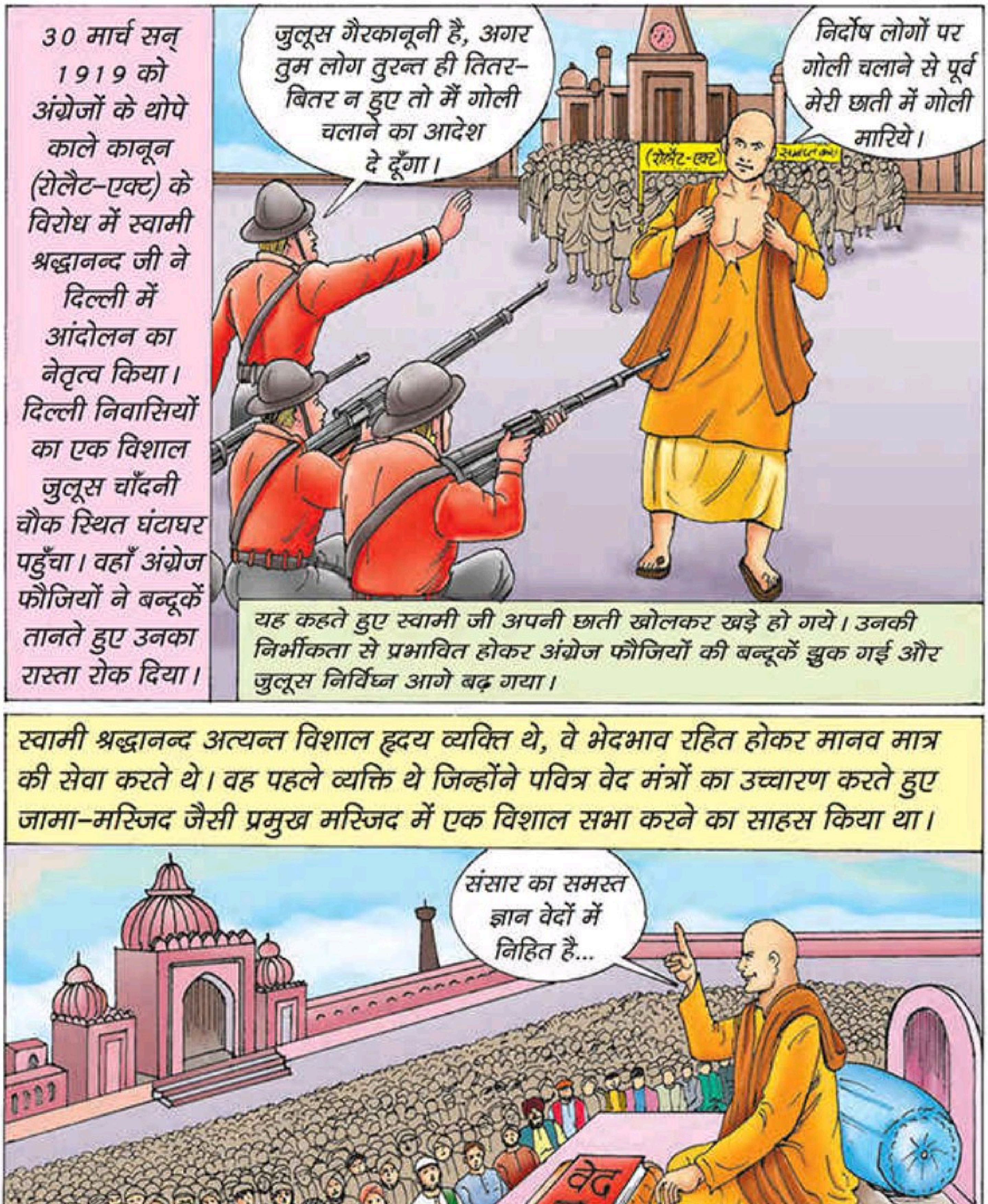
30 मार्च सन् 1919 को अंग्रेजों के थोपे काले कानून (रोलैट–एक्ट) के विरोध में स्वामी श्रद्धानन्द जी ने दिल्ली में आंदोलन का नेतृत्व किया। दिल्ली निवासियों का एक विशाल जुलूस चाँदनी चौक स्थित घंटाघर पहुँचा। वहाँ अंग्रेज फौजियों ने बन्दूकें तानते हुए उनका रास्ता रोक दिया।
जुलूस गैरकानूनी है, अगर तुम लोग तुरन्त ही तितर–बितर न हुए तो मैं गोली चलाने का आदेश दे दूँगा।
(रोलैट-एक्ट)
निर्दोष लोगों पर गोली चलाने से पूर्व मेरी छाती में गोली मारिये।
यह कहते हुए स्वामी जी अपनी छाती खोलकर खड़े हो गये। उनकी निर्भीकता से प्रभावित होकर अंग्रेज फौजियों की बन्दूकें झुक गई और जुलूस निर्विघ्न आगे बढ़ गया।
स्वामी श्रद्धानन्द अत्यन्त विशाल हृदय व्यक्ति थे, वे भेदभाव रहित होकर मानव मात्र की सेवा करते थे। वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने पवित्र वेद मंत्रों का उच्चारण करते हुए जामा–मस्जिद जैसी प्रमुख मस्जिद में एक विशाल सभा करने का साहस किया था।
संसार का समस्त ज्ञान वेदों में निहित है...
वेद
सभा निर्विघ्न समाप्त हुई थी, क्योंकि स्वामी जी की सेवा भावना से दिल्ली का मुस्लिम समुदाय बेहद प्रभावित था।

स्वामीजी ने दलितोद्धार व भारतीय हिन्दू शुद्धि-सभा स्थापित कर समाज के पिछड़े वर्ग को ऊपर उठाने में भरपूर सहायता की। उन्होंने शुद्धि-करण का भी कार्य आरम्भ कर दिया, इससे जो हिन्दू जबरन मुसलमान बना लिये गये थे वे पुनः हिन्दू धर्म में लौटने लगे।
'भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा'
शुद्धि समारोह व दलितोद्धार सम्मेलन
स्वामी जी के शुद्धिकरण के इस कार्य से मुसलमान कुपित हो गये। मुल्ला-मौलवी और कट्टर मुसलमान उन्हें मार डालने का षड्यंत्र रचने लगे।
हिन्दुओं का यह रहनुमा इस्लाम के लिए खतरा है। ये उन लोगों को अपने धर्म में लौटने को उकसा रहे हैं जिन्हें हमारे पूर्वजों ने अपने प्रभाव से मुसलमान बनाया था।
आप ठीक फरमाते हैं। उस काफ़िर को समाप्त करने का उपाय मैं सोचता हूँ।
उन लोगों ने षड्यंत्र रचा, 'अब्दुल रशीद' नामक एक मुस्लिम गुंडे को मजहब की दुहाई देकर इस घृणित कार्य के लिए तैयार कर लिया।
इस्लाम की सलामती के लिए तुम्हें ये काम करना ही होगा। अब्दुल रशीद! क्या तुम तैयार हो?
अपने मजहब की सलामती के लिए मैं प्रत्येक काम करने को हमेशा तैयार हूँ। समझ लीजिए आपका काम हो गया।

दिसम्बर 1926 में स्वामी जी, उत्तर प्रदेश का दौरा कर निमोनिया से पीड़ित होकर दिल्ली लौटे और नया बाज़ार स्थित एक मकान में आराम करने लगे।
23 दिसम्बर को दोपहर के समय वही गुंडा 'अब्दुल-रशीद' उस मकान के पास मंडराने लगा।
यही वह मकान है जिसमें वह स्वामी ठहरा है। अब मैं पानी मांगने का बहाना कर मकान में दाखिल होता हूँ।
अब्दुल रशीद ने दरवाजा खट-खटाया, अन्दर से स्वामी जी के सेवक धर्मसिंह ने पूछा-
कौन है ?
फिर धर्मसिंह ने दरवाजा खोल दिया, इसी समय अब्दुल रशीद ने षड्यन्त्र सोचा और बोला
प्यास लगी है। पानी पीने को मिलेगा ?
ठहरो! मैं दरवाजा खोलता हूँ।
फिर जैसे ही धर्मसिंह पानी लेने गया... स्वामी जी को लक्ष्य कर रशीद ने पिस्तौल से उन पर तीन गोलियाँ दाग दी।
धाँय
धाँय
धाँय
हाय!

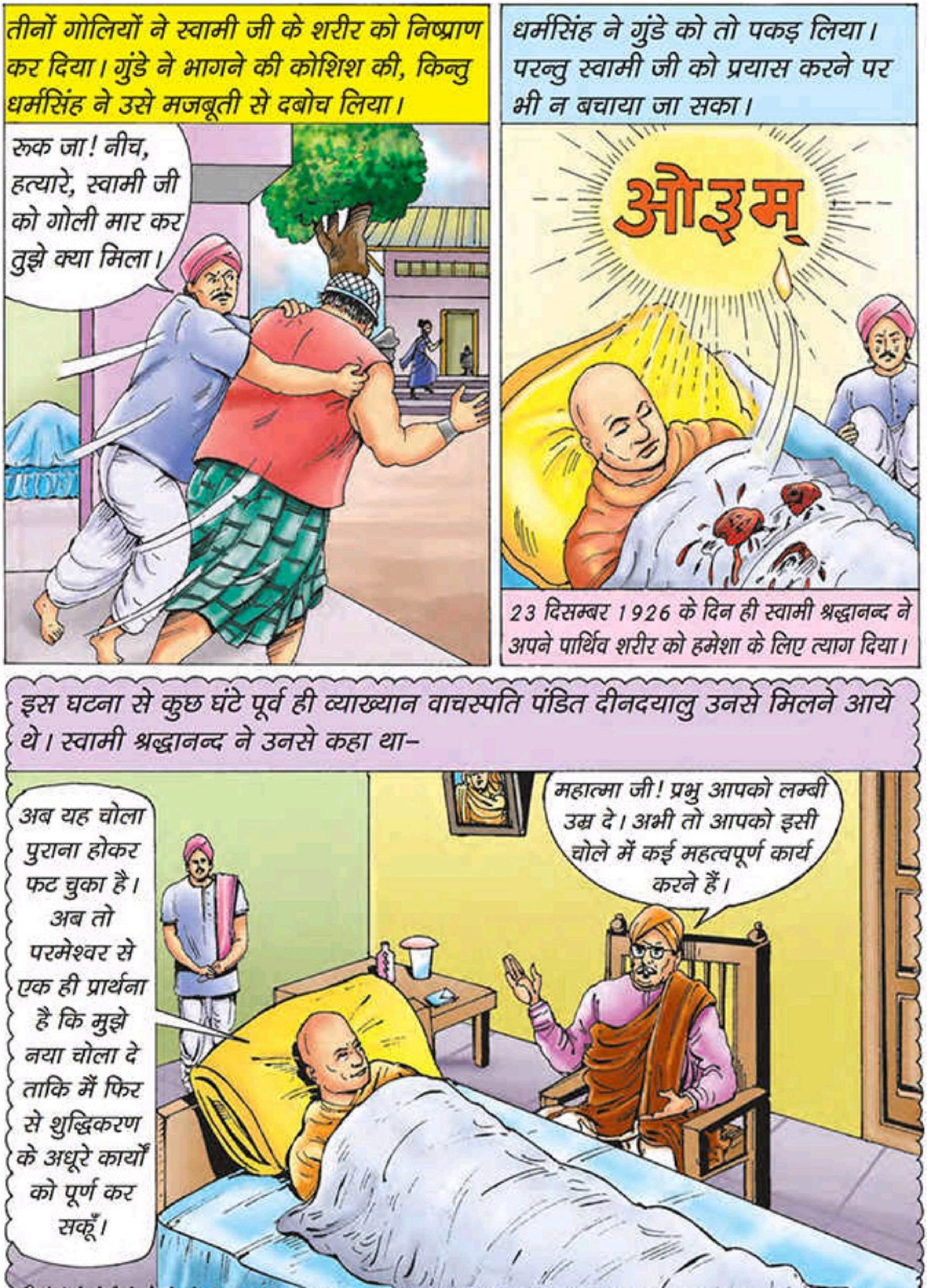
तीनों गोलियों ने स्वामी जी के शरीर को निष्प्राण कर दिया। गुंडे ने भागने की कोशिश की, किन्तु धर्मसिंह ने उसे मजबूती से दबोच लिया।
रूक जा! नीच, हत्यारे, स्वामी जी को गोली मार कर तुझे क्या मिला।
धर्मसिंह ने गुंडे को तो पकड़ लिया। परन्तु स्वामी जी को प्रयास करने पर भी न बचाया जा सका।
ओड़म्
23 दिसम्बर 1926 के दिन ही स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने पार्थिव शरीर को हमेशा के लिए त्याग दिया।
इस घटना से कुछ घंटे पूर्व ही व्याख्यान वाचस्पति पंडित दीनदयालु उनसे मिलने आये थे। स्वामी श्रद्धानन्द ने उनसे कहा था–
अब यह चोला पुराना होकर फट चुका है। अब तो परमेश्वर से एक ही प्रार्थना है कि मुझे नया चोला दे ताकि मैं फिर से शुद्धिकरण के अधूरे कार्यों को पूर्ण कर सकूँ।
महात्मा जी! प्रभु आपको लम्बी उम्र दे। अभी तो आपको इसी चोले में कई महत्वपूर्ण कार्य करने हैं।

और ईश्वर ने जैसे उनकी प्रार्थना सुन ली, 23 दिसम्बर के दिन ही स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने पंचभूत पार्थिव शरीर को हमेशा के लिए त्याग दिया।

लाला लाजपत राय ने स्वामी श्रद्धानन्द के अन्तिम संस्कार के समय भरे मन से कहा था–

"जब मैं पहाड़ से दीखने वाले महात्मा मुंशीराम जी के दर्शन करने और उनका गुरुकुल देखने गया, तो मुझे वहाँ बड़ी शान्ति मिली। हरिद्वार के कोलाहल और गुरुकुल की शान्ति के बीच का भेद स्पष्ट दिखायी देता था। महात्मा ने मुझे अपने प्रेम से नहला दिया। ब्रह्मचारी मेरे पास से हटते ही न थे। रामदेव जी से भी उसी समय मुलाकात हुई और उनकी शक्ति का परिचय मैं तुरन्त पा गया। यद्यपि हमें अपने बीच में कुछ मतभेद का अनुभव हुआ फिर भी हम परस्पर स्नेह की गाँठ से बन्ध गये। गुरुकुल में औद्योगिक शिक्षा शुरु करने की आवश्यकता के बारे में रामदेव और दूसरे शिक्षकों के साथ मैंने काफी चर्चा की। मुझे गुरुकुल छोड़ते हुए दुःख हुआ।"

–महात्मा गाँधी, सत्य के प्रयोग, आत्मकथा

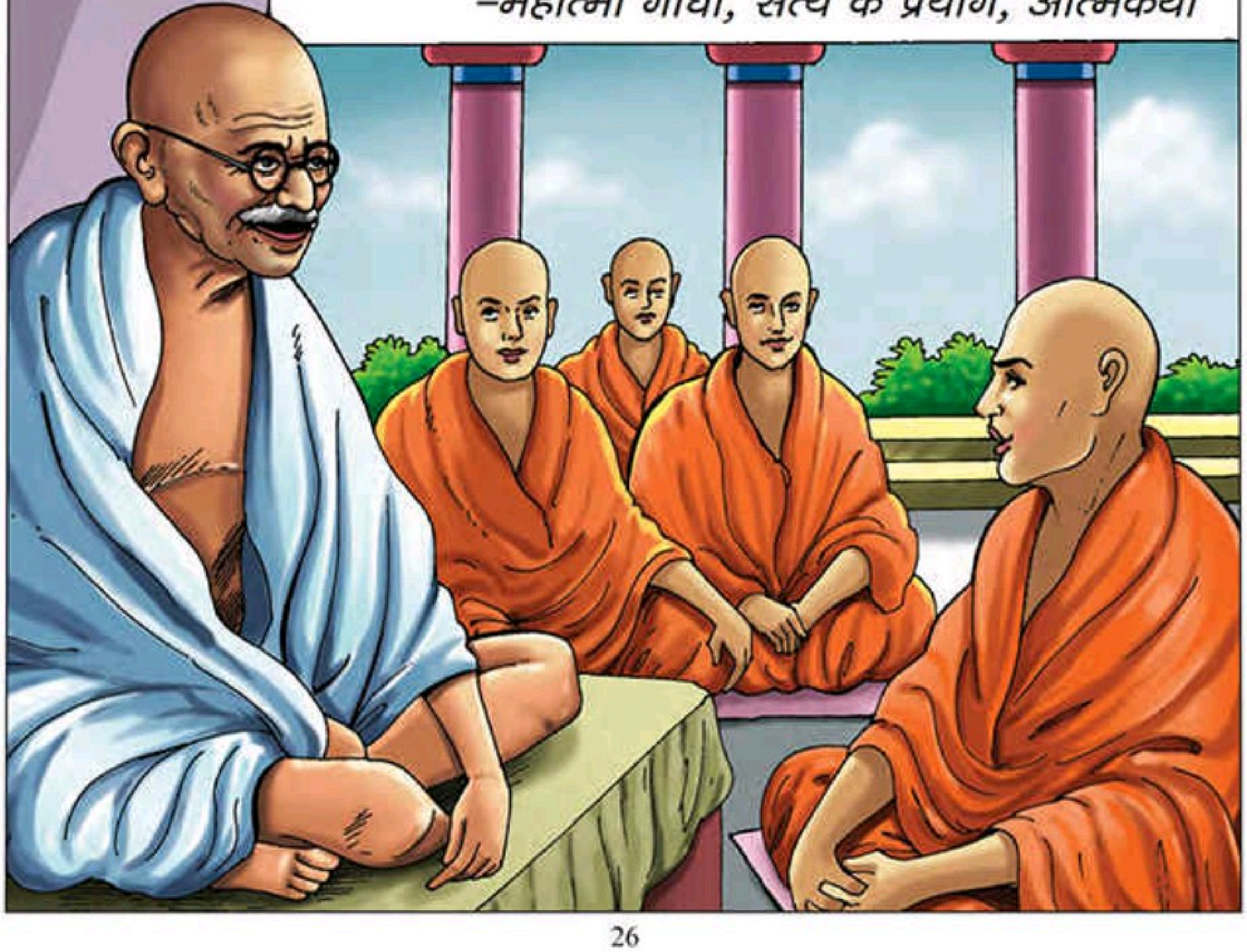

"स्वामी श्रद्धानन्द जी के आदर्श जीवन में बलिदान की भावनाएँ प्रारम्भ से ही व्यक्त हो चुकी थीं। उनके द्वारा स्थापित किया गया 'गुरुकुल' देश की सबसे पहले स्थापित की गयी संस्थाओं में से वह महान संस्था है जिसे सार्वजनिक सहयोग भली-भांति प्राप्त है और देश के विद्यालयों में आज वह एक सफल राष्ट्रीय विद्यालय है।"

–राष्ट्रपति बाबू डॉ राजेन्द्र प्रसाद

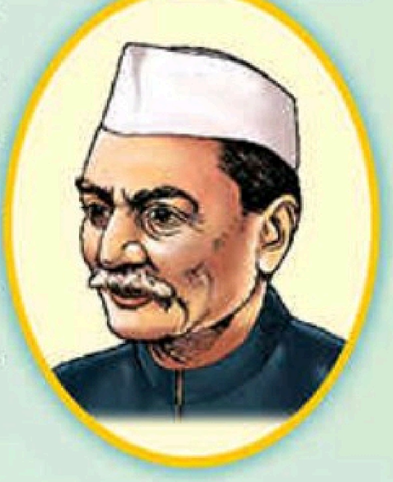

"स्वामी श्रद्धानन्द मृत्यु विजयी थे। सत्य को बहुत लोग जानते हैं लेकिन उसे मानते वे ही मनुष्य हैं, जो विशेष शक्तिवान हैं। सत्य के प्रति निष्ठा रखने का यह आदर्श स्वामी श्रद्धानन्द इस दुर्बल देश को दे गये।"

–राष्ट्रकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर

"व्यक्तिगत परिवर्तन की अद्भुत मिसाल कायम करते हुए, स्वामी श्रद्धानन्द ने अपनी सफल वकालत छोड़कर अपना सर्वस्व देश व समाज के लिए अर्पित कर दिया। उन्होंने आज़ादी के संग्राम में भी भाग लिया व 'गुरुकुल कांगड़ी' की स्थापना की।"

–महात्मा गाँधी

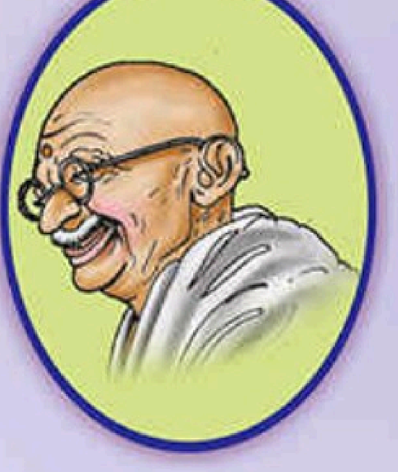

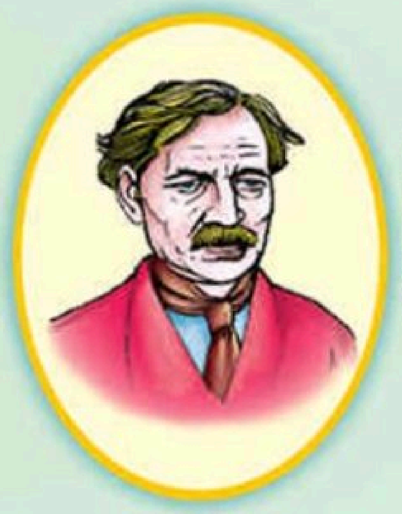

"एक महान भव्य और शानदार मूर्ति जिसके देखते ही उसके प्रति आदर का भाव पैदा होता है। हमारे आगे हमसे मिलने के लिये आती है।"

–रेम्ज मेकडानल्ड

"स्वामी जी के जीवन का एक मुख्य उद्देश्य था भारतवर्ष के युवकों को चरित्र की पवित्रता सिखाकर प्राचीन व अर्वाचीन दोनों प्रकार की शिक्षा से शिक्षित करना।"

–श्री कोंडा वकटपय्या

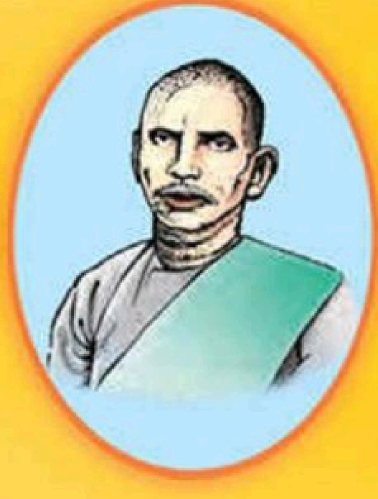

वैदिक पुस्तकालय

"आश्चर्यजनक कार्यशैली तथा चमत्कारिक बुद्धिमत्ता के वह अद्वितीय उदाहरण थे।"

–श्रीमती सरोजिनी नायडू

वैदिक
साहित्य
pdf मे प्राप्त
करने के लिए
टेलीग्राम
एप्लिकेशन
मे वैदिक
पुस्तकालय
या
vaidicbooks
सर्च करें

वैदिक पुस्तकालय

वैदिक पुस्तकालय